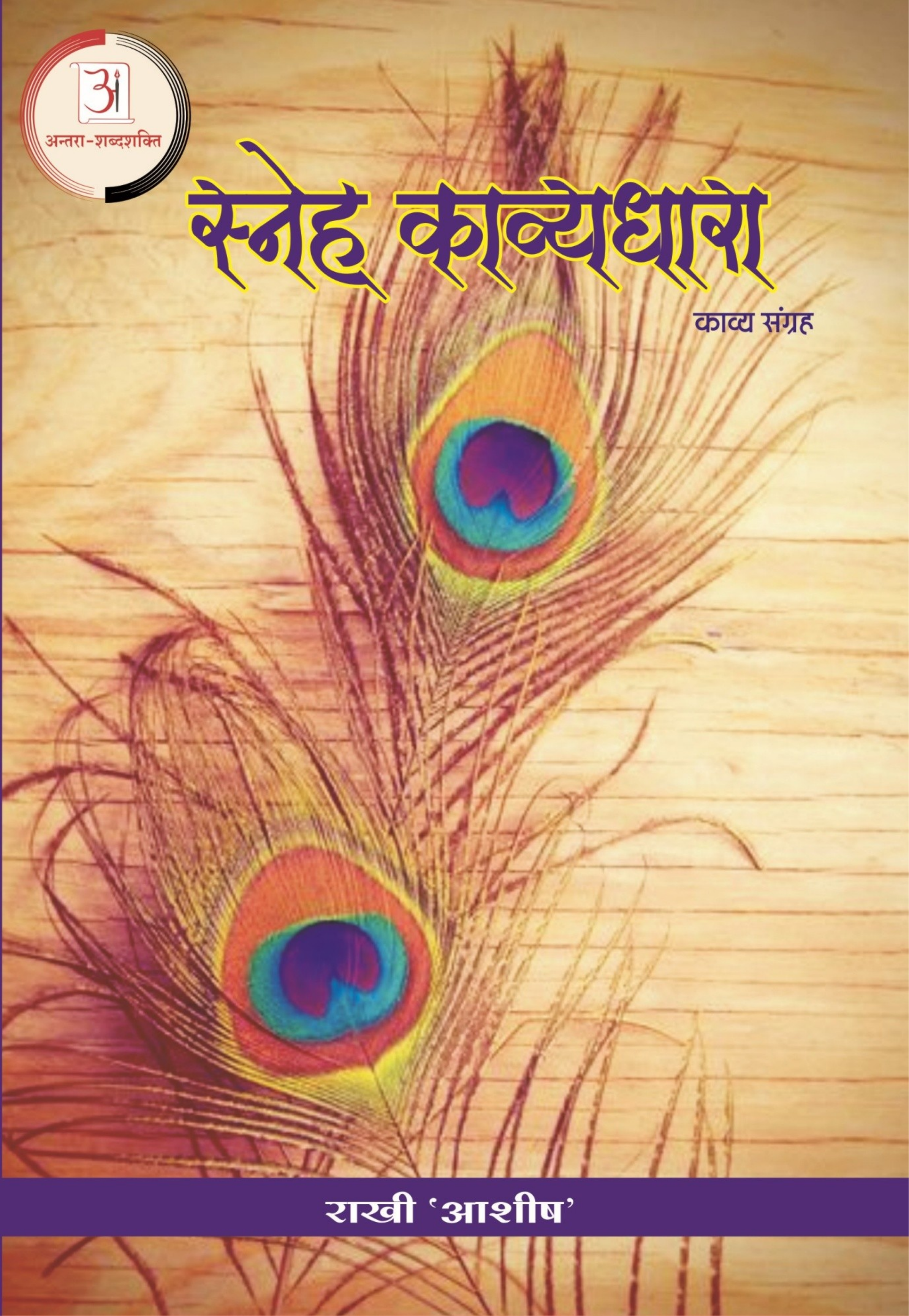

अन्तरा-शब्दशक्ति

# स्नेह काव्यधारा

काव्य संग्रह

राखी 'आशीष'

# स्नेह काव्यधारा

(काव्य संग्रह)

## राखी 'आशीष'

## अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
### वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-028-5"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९ राखी 'आशिष'
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
SNEHKAVYDHARA BY RAKHI ASHISH
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| | भूमिका | 5 |
| 1. | मयस्सर | 7 |
| 2. | शायद वो प्यार है | 8 |
| 3. | परछाई | 9 |
| 4. | मुझे याद नहीं है | 10 |
| 5. | मंजिल की ओर बढ़ते रहिए | 11 |
| 6. | हर रात की तरह ही | 12 |
| 7. | चाँद की मोहब्बत में | 13 |
| 8. | जिंदगी एक सवाल है तुमसे | 14 |
| 9. | बात उलझ कर रह गई | 15 |
| 10. | इन आँसुओं की कीमत क्या है? | 16 |
| 11. | ख्वाब | 17 |
| 12. | चांद के साथ टहलने निकले | 18 |
| 13. | सपनों के ढ़ेर में | 19 |
| 14. | देश जुड़ता था कभी | 20 |
| 15. | ये आईने से बातें करते क्या हो? | 21 |
| 16. | यूँ ही हो जाऊँ गर मैं रुख़सत | 22 |

17. जिस दिन गुलामी की बेड़ियाँ 23
18. जीवनसाथी का होना 24
19. किन आँखों से रोए हम 25
20. जिनसे भी मिली हूँ 26
21. मेरी नजरों को 27
22. बोलो दिल की कौन सुने? 28
23. लालटेन कब तक जलेगी? 29
24. एक बीज ख्वाब का 30
25. होली के मंच पर 31
26. मुझे पूरा कारवां दे दिया 32

# भूमिका

जैसे सागर की सतह पर भ्रमण करना सुख पहुँचाता है, किंतु सागर की गहराई में जाने वाले को अतुलनीय अतीव सुख का अहसास होता है, वैसे ही खुशियों से प्रेरित काव्य रचना पाठक को निःसंकोच मन रूपी समुद्र की सतह तक ले जाती है, किंतु दर्द से प्रेरित रचनाऐं गहराई का एहसास कराती हैं, फिर चाहे वह स्वयं का दुःख हो या किसी और का, फिर कवि तो 'समाज की रीढ़' होता है। वह स्वयं के साथ 'सर्वजन हिताय' की भूमिका बाँधता है। जब तक दर्द कुछ खास अंदाज में बयाँ नहीं होंगे तब तक उसे खुशियों में बदलने का पुरुषार्थ कहाँ होगा? यही कारण है, कि मेरा स्नेह सुख-दु:ख जीवन के दोनों पहलू से है और इन्हीं मिली-जुली मानवीय भावनाओं को काव्य रूप माँ शारदा की कृपा से मिला है। जिसे आप के समक्ष "स्नेह काव्य धारा" के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मेरी इन रचनाओं की प्रमुख प्रेरणा स्त्रोत एक बच्ची है, जिसका नाम स्नेह जैन (रायपुर) है, जिसने मेरे मोबाइल में लेखन से संबंधित एक एप इंस्टॉल किया। जिसने मेरी लेखनी को गति प्रदान की। लिखने के लिए पढ़ना अत्यंत आवश्यक है और अंततः मेरी रचनाऐं 'अंतरा शब्द शक्ति' एवं उनकी संपादिका 'डॉक्टर प्रीति सुराना' जी के माध्यम से आपके सम्मुख प्रस्तुत है। आप दोनों को हृदय से आभार एवं आप तक पहुँचने का रास्ता बताने वाले दीदी सीए शिल्पा जैन (चंद्रपुर) को भी धन्यवाद व आभार।

जीवन सफर में इस मुकाम तक पहुँचने का जो ज़रिया रहे -मेरे माता-पिता, सास-ससुर, जीवनसाथी आशीष बैद, बच्चे हर्षिका व मोहक, अन्य परिजन, गुरुजन, भाई-भाभी सभी को सादर प्रणाम व धन्यवाद। नव- साहित्यकार के रूप में कोई त्रुटि होने पर पाठक-गण उदार हृदयी बन क्षमा प्रदान करेंगे और आगे भी मेरी रचनाओं को आशीर्वाद देंगे। इसी आशा के साथ-"कुछ भावनाएं निःशब्द होती हैं, किंतु दिल में होती तो हैं और दिल की गहराई न तुम जानते हो न हम।"

**राखी 'आशीष'**

# मयस्सर

कितनी मुश्किलों से मयस्सर है यह रियासत जिंदगी की।
कितनी आसानियों से यूँ ही गँवाए जा रहे हो।

यह दौलत यूँ ही किसी पर लुटायी नहीं जाती 'राखी',
मुड़कर देखो यह किस पर लुटाए जा रहे हो?

इतना आसान नहीं है, पढ़ लेना जिंदगी की किताब,
क्यों बस यूँ ही वऱक पलटाए जा रहे हो?

मैं मुंतज़िर हूँ तुम्हारा, तुम मुंसिफ बने बैठे हो
मेरे हर एतबार की और सजा सुनाए जा रहे हो।

क्या वाजिब है मेरे वफाओं की ऐसी कीमत अदायेगी?
जफा तक ठीक था, उस पर मुस्कुराए जा रहे हो।

# शायद वो प्यार है

जज़्बात की सीपीयाँ दिल के समंदर में ,
अनमोल मोती हो जाए तो शायद वो प्यार है।

मैं कुछ गुनगुनाऊँ, वह किसी के लिए
खूब गजल हो जाए तो शायद वो प्यार है।

नजारों से हटकर उनकी नजरों की नज़्,
चुपचाप मेरी हो जाए तो शायद वो प्यार है।

वो बेचैन हों, उनकी राहतों का रास्ता
मेरी गलियाँ हो जाए तो शायद वो प्यार है।

कोशिशें नाकाम है , अब भी अल्फाजों की,
कोई यूँ ही समझ जाए तो शायद वो प्यार है।

# परछाई

मैं तेरी परछाई हूँ , तुझ में खुद को देखती हूँ,
माँ तेरे आँचल की छाँव में ही तो मैं बढ़ती हूँ।

तेरे दिल के आसमान में यादों की जो घटाएं हैं,
तेरे बातों की बारिश में बादल में ही तो रहती हूँ।

कब तुझको एहसास हुआ मेरी आँखों में खालीपन तेरा,
जो भी देखूं दुनिया में उस में रंग तेरा ही भरती हूँ।

तूने ही तो मुझे शब्द दिए ,भाव दिए ,एहसास दिए,
मेरी हर कविता में माँ तेरा कहा ही कहती हूँ।

निशी -दिवस, चाँद-सितारे, सूरज सब तेरी ही बातें हैं।
तुझमें ही तो अक्स जहाँ का तुझ में सरिता सी बहती हूँ।

# मुझे याद नहीं है

जिंदगी तेरे लिए मेरी वफाऐं ताउम्र,
तेरी बेवफाई के किस्से
मुझे याद नहीं है।

ख्वाब-ख्वाब का खेल देखती हूँ रोज,
कब-कब टूटे किस कदर
मुझे याद नहीं है।

हाँ! औरों को संभालती रही अक्सर,
ठोकरें देने वाले पत्थर
मुझे याद नहीं है।

शजर पर बैठी रही घोंसले की खातिर,
किसने-किसने काटे पर
मुझे याद नहीं है।

किस क़ोह में दबी रह गयी ज़मी मेरी
कब-कब बरसा अब्र
मुझे याद नहीं है।

# मंजिल की ओर बढ़ते रहिए

मुलाकात जीने का बहाना है, यूँ ही मिलते रहिए,
मुसाफिर हैं हम-तुम सफर के  साथ चलते रहिए,

पाँव थके किंतु रुके नहीं ,
धीरे-धीरे ही सही मंजिल की ओर बढ़ते रहिए।
धरती की बाहों से आकाश के राहों में,
हौसले को पंख बनाकर, ऊँचाइयों में उड़ते रहिए,
धीरे-धीरे ही सही मंजिल की ओर बढ़ते रहिए।

चट्टानों को मात देकर,
पत्थरों की सौगात लेकर,
निडर, निर्मल, निर्झर झरने सा,
अनवरत बहते रहिए।
धीरे-धीरे ही सही मंजिल की ओर बढ़ते रहिए।

# हर रात की तरह ही

हर रात की तरह ही यह, रात गुज़र जाएगी,
मैं जागती रहूँगी नींद में और रात पसर जाएगी।

चाँद की सफेद रोशनी से, कुछ हल्की ताप लेकर,
सपनों की कुछ लकड़ियों को, फिर चिंगारी मिल जाएगी।

सितारों के अंगारों से जो थोड़ी और सुलग जाएगी।
हर रात की तरह ही यह रात गुज़र जाएगी।

ख्वाहिशों के फिर डेरे लगेंगे, बेताबियों के तंबू गड़ेंगे,
मन के बंजारे सजाएंगे महफिल, खुशी और खिल जाएगी।

बढ़ेगी आग सहर होते फिर सब राख कर जाएगी,
हर रात की तरह ही यह रात गुज़र जाएगी।

# चाँद की मोहब्बत में

चाँद की मोहब्बत में, हर शख्स ने अपने सितारे खोए,
खुशी के दिन की ख्वाहिश में, मगर लम्हें खुशी के सारे खोए।

माना सूखे दरख़्त में,
मुश्किल है हरे पत्तों का मिलना,
पतझड़ का वक्त था वह अपनी नासमझी,
क्यों वसंत के नजारे खोए।
चाँद की मोहब्बत में, हर शख्स ने अपने सितारे खोए।

बहुत रिश्ते सराबोर हैं,
प्रेम के रंग और खुशबू से,
एक प्रेमी के प्रेम में, सूखकर सहज
हमने सारे अपने प्यारे खोए।
चाँद की मोहब्बत में, हर शख्स ने अपने सितारे खोए।

कोशिश करते रह गए,
लेकिन बात समझ न पाए हम,
किस्मत की परियों ने, किए कई बार,
पर हमने सारे इशारे खोए।
चाँद की मोहब्बत में, हर शख्स ने अपने सितारे खोए।

# जिंदगी एक सवाल है तुमसे

जिंदगी एक सवाल है तुमसे, क्यों तुम मुझे नहीं देखती?
तुम मुझमें हो तो सही, पर क्यों मुझको एहसास नहीं?

क्या कर्मशील नहीं हूँ मैं, या नहीं हमकदम वक्त की?

क्यों रूठी सी रहती हो? बहती जैसे चुप-चाप नदी।

कभी तो तुझ में हलचल हो, कभी तो फेंके पत्थर कोई,
सपनों के इंद्रधनुषी रंग भर दे तुझ में रंग कोई।

ख्वाहिशों के समंदर अपने उम्मीदों की घटाऐं हो,
तेरे नैनों की बिजलियाँ, रोशन मेरे तन के साए हो।

कभी तो हौले से आओ, मेरे अंतर्मन के गलियारे,
अपनी अंजुली से आशाएँ फेंको, भर दो इन में खुशियों के तारे।

अब भी क्यों खामोश खड़ी? क्या सुनोगी मुझे कभी नहीं?
जिंदगी एक सवाल है तुझसे, क्यों तुम मुझे नहीं देखती?

# बात उलझ कर रह गई

बहुत समझाने की कोशिश की,
बात उलझ कर रह गई,
अब न जाने इस डोर पर,
कितनी गिरहें अनखुली रहेगी?

कितनी शामें अनकही रह गई,
कितने अनसुने स़हर,
बातों की बाँसुरी से अब,
मीठी धुन फिर कब निकलेगी?
बहुत समझाने की कोशिश की।

उम्र के कितने पहर हैं,
गए गुजर, कब तक सांसो की
साजिश और रंजिश अंजाम को
कब शक्ल मिलेगी?
बहुत समझाने की कोशिश की।

सुन लेते तुम बिन कहे,
एहसास मुकम्मल हो जाते।
जाने अब इस तकरार में
कब इश्क की सौगात मिलेगी?
बहुत समझाने की कोशिश की।

# इन आँसुओं की कीमत क्या है?

जो कीमत लगा कर गए
बाजार में मेरी उनके लिए,
इन आँसुओं की कीमत क्या है?

जो पल में उजाड़ गए चमन सारा,
उनके लिए मदमस्त बहारों की कीमत क्या है?

दिल में दस्तक देकर वार कर गए,
उनके लिए सच्चे दोस्तों की कीमत क्या है?

प्यार में जफा करना उसूल है जिनका,
उनके लिए मेरी वफाओं की कीमत क्या है?

ताजपोशी हासिल है जिन्हें पेशेवर चोर निकले,
उनके लिए दिए वादों की कीमत क्या है?

ताउम्र नुमाइश करते रहे बदन की मेरे,
उनके लिए मेरी चूड़ियों की कीमत क्या है?

# ख्वाब

पलकों की चादर ओढ़े कुछ अल्हड़ से ख्वाब हैं।
आँखों के पलने में पलते, पल पल नन्हे ख्वाब हैं।

न थामी उंगली मैंने, न चलना ही सिखा पाई,
रोज मिरी आँखों से फिसल कर एक-एक मरते ख्वाब हैं।

अब तो नदी भी तल तक सूख गई है,
कण-कण में आशा के जल, ढूँढते यह ख्वाब हैं।

दिल का दरिया भी रेत का रेगिस्तान हो चला,
तैरते थे जो इनमें, धूल बन उड़ते से ख्वाब हैं।

ख्वाब का ये हस्र, नज़्र में मिला है हमको,
रूढ़ियाँ नस्ल में बाकी है अभी और छूटते ख्वाब हैं।

# चांद के साथ टहलने निकले

चाँद के साथ टहलने निकले,
मेरे नैनों की सितारे।
कुछ उम्मीदों की धवल चाँदनी,
से झिलमिल कुछ दूर में हैं शर्माए।

एक-एक कर में गिनूं रात भर,
मेरे ख्वाबों के सितारे,
आँखों से निकलकर देखो,
आसमान में भर गए सारे।

यह कारवां सपनों का मेरे,
जिस मंजिल तक पहुँचा,
वहाँ न कोई रंगभेद है,
बस प्रेम का रंग एक सच्चा।

निशि ने दिया उपहार प्रेम का,
गर्दिश में नहीं मेरे तारे,
चाँद के साथ टहलने निकले
मेरे नैनों के सितारे।

# सपनों के ढेर में

सपनों के ढ़ेर में आग लगाकर आई हूँ,
मुझे मालूम है, तुम्हें सपने पसंद नहीं है।
अब तक खाक में मिल गए होंगे, क्या
मेरा किया वादा अब भी भरोसेमंद नहीं है?

टटोलते हो कि कहीं एक सपना
भी तो बचा नहीं इन आँखों में?
परखते हो कि बेवफाई की हवा
घुल तो नहीं रही इन सांसों में?

न समझ पाए समर्पण मेरा,
न समझा तुमने प्रेम।
स्वार्थ और अहंकार का
बस खेलते रह गए खेल।

मेरे लिए तुम्हारे दिल का
दरवाज़ा बंद हो भले,
तुम्हारे लिए मेरे दरवाज़े बंद नहीं है।
प्रेम काव्य की रचना में,
मेरे प्रियतम!तुम्हारे बिना
कोई अलंकार कोई छंद नहीं है।। सपनों के ढ़ेर में,....!

# देश जुड़ता था कभी

घरों के जुड़ने से देश जुड़ता था कभी,
अब तो घर-घर ही बिखर रहे टुकड़ों में।

दर्द बहुत होता है, मगर कहे क्या 'राखी'?
अब किसी को रुचि नहीं, किसी की सुनने में।

प्रेम, त्याग, समर्पण नाम की स्वादिष्ट मिठाइयाँ,
अब बनती नहीं कभी किसी भी घर में।

सुडौलता की होड़ लगी, मन भले मलिन हो,
मिठास जुबां पर अब नहीं, शुगर-फ्री के चक्कर में।

जब बच्चे थे तो सब अपने ही अपने थे,
अब उन्हें ही रखते हैं, क्यों मज़हब के पलड़े में।

छोड़ो जर, जोरू,  जमीन, अलगाव की बात सभी,
"वसुधैव कुटुंबकम" कोई ऐसे ही नहीं लिख गया जहाँ में।

# ये आईने से बातें करते क्या हो?

अक्स देखा करो हर सह़र अपना,
वाजिब भी है, मगर यह आईने से बातें करते क्या हो?

माना खूबसूरत हो नीलकमल की तरह,
दिखावे के दलदल में, मगर यह बार-बार पाँव धरते क्या हो?

सूरत ही दिखाता है, सीरत नहीं इसके मौन पाश में,
इफ्तिख़ार, खुद को यूँ जकड़ते क्या हो?

मौन रहकर गुजर जाएगी जिंदगी 'राखी',
आवाज दो हुक्मरानों को, यह गिनतियाँ और सिखों की करते क्या हो?

निज़ाम बदलता रहेगा, बदल लो खुद को,
आँधियाँ चाहते हो बदलाव की, तो ग़ुबार बनने से डरते क्या हो?

दिल से दिल मिलते रहे ताजिंदगी,
सजदा भी होगा वहीं, मगर इसके लिए पा़क जगह ढूँढते क्या हो?

# यूँ ही हो जाऊँ गर मैं रुख़सत

यूँ ही हो जाऊँ गर मैं रुख़सत, तो दुनिया जान भी न पाएगी।
चंद लोग देखेंगे मैयत 'राखी' और जिंदगी खाक हो जाएगी।

नहीं! मैं वह धुआँ नहीं,
जो बिना पकाए एक रोटी,
बिना भरे किसी का पेट,
आग के हाथों से फिसल जाएगी। मैं तो वह ज्योति हूँ जो,
कईयों की राह रोशन कर जाएगी, यूँ ही हो जाऊँ गर मैं रुख़सत..

नहीं! मैं वह बूंद नहीं,
जो बिना किसी की प्यास बुझाए,
बिना किसी बीज को फलाए,
बादल से सागर में गिर जाएगी। मैं तो वह बारिश हूँ
जो बंजर धरती को उर्वर कर जाएगी, यूँ ही हो जाऊँ गर मैं
रुख़सत,..

नहीं! मैं वह पत्थर नहीं,
जो बिना किसी इमारत की नींव बने,
बिना किसी मूरत का भाग बने,
नदी के तल में चली जाएगी। मैं तो वह चट्टान हूँ
जो नदी को नया मोड़ दे जाएगी, यूँ ही हो जाऊँ गर मैं रुख़सत,..

# जिस दिन गुलामी की बेड़ियाँ

जिस दिन गुलामी की बेड़ियाँ, मेरी जुबां काट जाती है,
उस दिन मेरे त्याग की कोई कीमत नहीं रह जाती,
ठीक वैसे ही जैसे
जले हुए दीपक की थोड़ी सी बची बाती।

रोज सुबह नयी होती हूँ,
हर शाम फेंक दी जाती हूँ।
दिन भर जलकर भी
कोई महत्व नहीं पाती हूँ।

जो रोशनी करती हूँ मैं,
दिन का उजाला निगल जाता है।
शाम की जगमगाहट का
श्रेय दीए को जाता है।

माना जलना कर्तव्य है मेरा,
किंतु वफाएँ मैं भी चाहती हूँ।
प्रार्थना सिर्फ दीए के लिए क्यों?
दुआएं मैं भी चाहती हूँ।

धैर्य का अर्थ कमजोरी नहीं समर्पण है,
मेरा ये जान लो।
स्वार्थ का वृक्ष,
अहंकार की डाली निष्फल होती है मान लो।

# जीवनसाथी का होना

जीवनसाथी का होना
सबके जीवन का हिस्सा है,
लेकिन तुम्हारा होना कुछ खास है।

कई मौसम साथ गुजारे हमने
तुम्हारी हर याद दिल के बहुत पास है।

तुमसे जुड़कर मेरा वजूद जिंदा है,
तुम हो तो मेरा मन उड़ता परिंदा है।
तुमने कभी मुझे उड़ने से रोका नहीं
कभी किसी बात पर मुझको टोका नहीं।
बहुत मीठा तुम्हारे साथ का एहसास है।।

जिंदगी तुम्हारी मेरे लिए खुली किताब सी,
न कुछ छुपाया तुमने, न छूपाने की कोशिश की,
अनमोल हो तुम वैसे ही जैसे सागर में मोती,
तुम न होते तो शायद मैं इतनी खुश न होती।
मेरा तुम पर सदा ही अटूट विश्वास है।।

कई उतार-चढ़ाव जीवन में अपने आएंगे,
वादा है फिर भी हम साथ मुस्कुराएंगे
बस जैसे तुम आज हो वैसे हमेशा रहना।
समय की धारा संघ मौज में बहते रहना।
तुम हो तो मुझे हर पल से नएपन की आस है।।

## किन आँखों से रोए हम?

दिल दर्द से भरा हुआ
छलकने को है बेताब,
किन आँखों से रोए हम
इन आँखों में आफताब।

भाप बनकर उड़ रहे
आँसुओं के धार-धार,

कहने वाले कहते हैं,
इन आँखों को लाजवाब।

तपिश से पन्ने जल रहे
धीरे-धीरे सब राख-राख,
कोई कैसे पढ़ पाएगा
मेरे मन की ये किताब?

रतजगों ने दिए थे जो
पिघलते हैं, वो ख्वाब-ख्वाब,
जाने कब डूबा जाए ख्वाहिशों
का बढ़ता सैलाब।

## जिनसे भी मिली हूँ

जिनसे भी मिली हूँ अब तक वह मुझे याद करते हैं,
कहीं न कहीं, कभी न कभी वो मेरी बात करते हैं।

सबकी यादों में ज़िंदा हूँ मैं,
अब मरने का मुझको खौफ नहीं,
बद्दुआ में किसी के शामिल होऊँ,
ऐसा कतई मुझको शौक नहीं।

हर कदम हर क्षण हर पल
सब ओर हो चहल-पहल,
जब तक सांसों की रवानी रहे,
मेरी जिंदगी प्रेम की कहानी रहे।

बचपन मेरा चलता रहे,

ताउम्र मेरे साथ साथ,
निश्छल, निस्पृह, मिश्री सी हो
मुंह से निकली हर एक बात।

न दुखाऊँ मन कभी किसी का,
न हो किसी का मुझसे अपमान,
सही-गलत का भान रहे और
सत्य सदा ही पावे मान।

# मेरी नजरों को

मेरी नजरों को तेरी नजरों की ख्वाहिश थी,
तेरी नजरों को मगर किसी और नजर की ख्वाहिश थी।

यह किस्सा हर टूटे दिल का कब कहानी पूरी हुई है,
पास रहकर भी जन्मों से कब यह दूरी खत्म हुई है।

सब कुछ पाकर भी हमने सचमुच सब कुछ खोया है,
प्रेम की माला टूटी कब से मनका-मनका पिरोया है।

वो सब किया हमने जो तेरी फरमाइश थी,
तेरी नजरों को मगर किसी और नजर की ख्वाहिश थी।।

आह दिल की, आँखों से भाप बनकर उड़ गए।
जो बचे थे थोड़े कुछ कोर से फिर मुड़ गए।

इश्क की बिसात पर मोहरे अपने प्रेम के,
खेल-खेलकर दांव ये थक चुके, फीके पड़े।

सब समझ हम हैं गए जो तेरी समझाइश थी।
तेरी नज़रो को मगर किसी और नज़र की ख्वाहिश थी।।

# बोलो दिल की कौन सुने?

भौतिकता की प्रतिस्पर्धा में,
बोलो दिल की कौन सुने?

तकनीकों के शोर-शराबे,
मन के सन्नाटे कौन सुने?

अहं का ऊँचा सिंहासन है,
धैर्य धरा पग कौन धरे?
बोलो दिल की कौन सुने?।।1।।

स्वार्थ के करघे में,
रिश्तों के ताने-बाने कौन बुने?
सब अपनी पीर में,
किसकी पीर कब कौन हरे?
बोलो दिल की कौन सुने?।।2।।

आवाजों में अपनी गुम,
दूसरों की फिर कौन सुने?
नदी तीर सब खड़े
गगरी जल की कौन भरे?
बोलो दिल की कौन सुने।।3।।

# लालटेन कब तक जलेगी?

न लक्ष्य का निर्धारण सम्यक,
न मार्ग की सुस्पष्टता है,
अंतहीन सिलसिला अनवरत
युग अंधा चलता रहता है।

कौन किसको खींच ले कब?
भय हरदम लगता रहता है।
इस ओर खाई उस और कुआँ
और फासला घटता रहता है ।

आस्तीन के सांपों को अब
रोज दूध पिलाना पड़ता है,
उससे भी न चले काम
तो बीन बजाना पड़ता है।

कब चलोगे सही राह पर,
कब सीखोगे लक्ष्य साधना?
एकाग्रता, तन्मयता हो तो,
होगी पूरी फिर सभी कामना।

सांसो का ऐतबार न करना,
जो है, बस है अभी,
मन रोशन करके चलो,
लालटेन कब तक जलेगी?

# एक बीज ख्वाब का

पल प्रतिपल यह अवचेतन मन,
एक बीज ख्वाब का बोता है।
दिवास्वप्न ही तो धरा पर,

कदाचित सफल वृक्ष वट होता है।

भीतर जो जड़ सम्बद्ध मूल से,
बाहर शाखा से है हुआ जुड़ा।
जिसने जीवन विज्ञान ये समझा,
वह आत्म कल्याण की ओर मुड़ा।

प्रकाश का आधार है बाती,
बाती का घी, तेल, दीया।
दीए का आधार धरा है,
आत्मा का जैसे शरीर पिया।

चलो चलें उस ओर जिधर,
तमस ज्योति की मैत्री हो,
सुख-दुःख दो किनारे अपने,
जीवन बहती नदी सी हो।

# होली के मंच पर

अच्छाइयों के रंग से रंगना था,
हमें और हम दूसरों की
बुराइयाँ जलाए जा रहे हैं,
चैतन्य को त्याग दिया हमने,
बस लाश उठाए जा रहे हैं।
दुर्गंध फैल रही सब ओर
और हम इत्र लगाए जा रहे हैं।
चैतन्य को त्याग दिया हमने,
बस लाश उठाए जा रहे हैं।

बरसाना की लट्ठमार

हमारी डीजे के साथ-साथ
होली की खुब उमंग है।
चेहरे पर रंग, गिलास में भंग,
मनचलों के मचते हुड़दंग हैं।

कई अस्मत के खेल हुए,
कईयों के तो लहू बहे,
चीखें शोरों में दब गईं
और खून रंगों से जा मिले।
इस होली के मंच पर,
क्या-क्या खेल रचाये जा रहे हैं।
चैतन्य को त्याग दिया हमने,
बस लाश उठाए जा रहे हैं।

# मुझे पूरा कारवां दे दिया

कुछ ख्वाहिशों ने, पन्नों पर आकार ले लिया।
वक्त के झोंकों ने उन्हें फिर अपने साथ ले लिया।

उड़कर पहुँचा वह किस्मत की दहलीज़ पर मेरे,
किन्ही हाथों ने फिर उन्हें उस पार कर दिया।

चित्र जो उभरा कागज पर खालीपन था जरा,
किसी मेहरबान ने उसमें फिर जादुई रंग भर दिया।

कैनवास पर चढ़कर हुआ और खूबसूरत वह,
प्रदर्शनी में इस जहाँ की बहुत खास बन गया।

रंग अरमानों का आसमानों में जो बिखरने लगा,
समेट कर कोशिशों ने उसे फिर सजीला इंद्रधनुष कर दिया।

सफर जारी था, मैं न अकेला राही था,
प्यार ने हर पड़ाव पर मुझे पूरा कारवां दे दिया।

# व्यक्तित्व दर्पण

नाम - राखी 'आशीष'
जन्म - 23.05.1983, ग्राम मुंगेली (बिलासपुर)
शिक्षा - एम.एस.सी. (प्राणी विज्ञान),
एम.एस.सी. सेकेण्ड सेमेस्टर (बायोटेक्नोलॉजी), बी.एड.
पता -श्री चन्द्रप्रकाश आशीष कुमार वैद, बी-14, आम्रपाली सोसायटी
कलर्स मॉल के पीछे, गंगा डायग्नोस्टिक रोड, पचपेढ़े नाका, लालपुर
रायपुर (छ.ग.) 492001
ई मेल - rakhiakb@gmail.com
मो. - 8815111110
प्रकाशन - सीढ़ियाँ समझ की (काव्य संग्रह)
सम्मान - एम.एस.सी. (प्राणी विज्ञान) - स्वर्ण पदक।
महाविद्यालयीन विभिन्न प्रतियोगिताओं (काव्य लेखन, वार्षिकोत्सव, नृत्य प्रतियोगिता, एथलेटिक्स आदि) में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त।
भिलाई महिला महाविद्यालय सेक्टर- 9 द्वारा 2006 में अतिथि व्याख्याता के रुप में आमंत्रण।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क– ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-028-5
मूल्य- 60/-